।। रिसते जख्म का दर्द ।।

आत्मीयता,समानता और सद्व्यवहार मानव मन को कितना सकून देते हैं शब्दों में बयान कर पाना मुश्किल है। इस यकीन को पुख्ता करता है यह गीत– ना हिन्दू बनेगा ना मुसलमान बनेगा इंसान की औलाद है इंसान बनेगा ।आजकल फिल्मों से तो ऐसे सामाजिक एकता और सद्भावना के गीत तो गायब ही हो गये है । फिल्म फूहड प्रर्दशन और हल्के फुलके मनोरंजन का साधन बनकर रही गयी है। फिल्मों का काम सिर्फ मनोरंजन करना ही नही होता समाज का दिशा निर्देशन भी होता है । आज की फिल्में अपने नैतिक दायित्व को भूलकर बस पैसा बनाने की मशीन बन रही हैचाहे इसके लिये नंगा प्रर्दशन ही क्यों ना करना पडे । रूढिवादी समाज भी सामाजिक बिखराव की दिशा में आग में घी डालने का काम कर रहा है । परिणामस्वरूप सामाजिक–विपमता के रिसते जख्म का दर्द शोपित,पीडित,वंचित समाज को चैन से जीने भी नही देता । 21वीं शदी में भी जातीय भेद का आतंक सामाजिक विद्रोह को उत्प्रेरित कर रहा है परन्तु देश की माटी से जुडा हुआ देश भक्ति से ओतप्रोत बुध्द,गुरूनानक और महावीर के प्रति आस्थावानवंचित–पीडित समाज लाख अत्याचार झेलकर भी विद्रोह पर नही उतर रहा है । दूसरी तरफ सामाजिक असमानता के समर्थक प्रहार करने से बाज नही आ रहे है । जाति एवं धर्म की चौपाल हो अथवा दफ्तर जातीय–भेद के अजगरों की फुफकार सुनाई पड ही जाती है । देश के पछत्तर से अस्सी फीसदी लोग भेदभाव के शिकार है। आज के कई दशक पहले समाज में छुआछूत काफी घिनौने यौवन मे तो था ही दफ्तर भी अछूते न थे । खैर कुछ कमी तो आयी है परन्तु समाप्त तो नही हुई है । कुछ रिसते जख्म का दर्द मुझे भी असहनीय दर्द देता है । वो वाक्या हमेशा याद रहता है जब उंची पहुंच का अल्पतम् शिक्षित रईस नाम का एक चपरासी खुलेआम भेदभाव करता था । जब दो चार लोग इक्टठा होते थे तो छोटी जाति के नाम पर अशोभनीय शब्दो का प्रयोग करता था । जातीय श्रेप्ठ लोग चटखारे लगाकर आनन्दित होते थे । दफ्तर और शौचालय की साफ सफाई करने वाली यादोबाई से पूछता क्यों बाई तुम्हारे धर्म में सबसे नीच जाति कौन होती है । बाई कहती धोबी । तब वह बोलता नही बाई चमार सबसे नीच जाति होती है । तुम्हे अपने ही धर्म के बारे में कुछ पता नही है । कभी कभी बडे लोगो से सुनने में आता जातीय छोटे लोगो को दबाकर रखना चाहिये जरा सी मोहल्लत दिये तो समझो खैर नही ।ऐसी बाते छाती में कील ठोकंने सरीख लगती थी,खैर आज भी वैसी ही लगती है। पढे लिखे लोगो का विचार ऐसा घिनौना हो सकता है तो ग्रामीण और युगों से जाति के जहरीले दरिया में हिचकोले खाने वालो का कैसा बुरा बर्ताव होगा । आज भी सिहरन पैदा हो जाती है छुआछूत के आतंक को देखकर। वर्तमान समय में भी अत्याचार,उत्पीडन,बलात्कार ,चीर हरण,हत्याये तक हो रही है सिर्फ सामाजिक विपमता के कारण । ना जाने कब तथाकथित सामाजिक श्रेप्ठ लोग भेद का जहर पी रहे समाज को बराबर का समझेगे ।

इस अमानवीय भेदभाव की कडी में आलोट जिला रतलाम के सवर्णो न एक और काला पन्ना जोडकर सामाजिक भेदभाव के घिनौने चलन को पुख्ता कर दिया है। दलित दूल्हे को घोडी पर सवार होना सवर्णो को इस कदर नागवार गुजरा कि उन्होने बखेडा कर दिया । भला हो प्रशासन का पुलिस बल का जिन्होने सुरक्षा प्रदान कर वर निकासी ही नही फेरे तक पडवाये और अभियुक्तों के खिलाफ नामजद प्रकरण भी दर्ज किये । ये किस धर्म के मानने वाले लोग है । किस अमानवीय परम्परा को ढोने वाले लोग है जो तथाकथित छोटी जाति की सुख की घडी मे गमगीन और दुख की घडी में जश्न मनाते हैं। तनिक तनिक बातों पर वंचितों का खून पीने से भी बाज नही आते। सही अर्थो में मानव होने के नाते मानवीय कर्तव्यों का पालन ही धर्म होना चाहिये । सामाजिक बुराई के नाम पर मानव का विरोध करना ,शोपण करना, अत्याचार करना अपराध ही नही सभ्य समाज और देश की अस्मिता के साथ खिलवाड है । कहने को सभी समानता की बाते कर नही थकते

। यदि कोई सर्वेक्षण हो तो श्शायद ही कोई मिले जो अपने को जातीय भेदभाव का पोपक माने । इतना ही नही वह बेहिचक अपने आपको सर्वसमानता का प्रखर प्रहरी कहेगा परन्तु व्यवहार इससे एकदम भिन्न होता है , तभी तो मंदिर प्रवेश को लेकर आतंक,दूल्हे को घोडी पर चढने को लेकर आतंक,शोपण,उत्पीडन अत्यचार बलात्कार तक की घिनौनी बारदातें हो रही है ।

सामाजिक समानता की जबानी बातें करने मात्र से समानता कभी नही आ सकती चरित्र में उतारना होगा । सिर्फ समानता की बाते करने और चरित्र सें विपरीत करना देश और समाज दोनों के लिये अहितकर होगा । सामाजिक असमानता की पोपक ताकतो का सबसे बडा गुण है कि वे समझौतावादी वंचितो शोपितो पीडितों को सदैव अपनी गिरफ्त में लपेटे रहती है और मौका पाते ही प्रहार कर बैठती है । इस दो मुही बात को समाज और देश के नीति निधार्रको को समझना होगा ।

देश में मुख्य रूप से भेदभाव के लिये जिम्मेदार है वर्ण–भेद । जिसकी वजह से चौथा वर्ण अर्थात शूद्र छुआछूत का शिकार है,खैर रंग भेद तो भेदभाव का कारण बना ही नही परन्तु जातिवाद ने वंचितों का जीना ही मुश्किल कर दिया है । आज के जमाने में भी आलोट जैसी घटनायें हो रही है । देश मे जातीय संघर्प का कारण वर्णभेद है । यदि वर्ण भेद मिट जाये तो छुआछूत अस्तित्वहीन हो जायेगी । भारतीय समाज में सवर्ण–अवर्ण के भेद की ध्वनि नही सुनाई पडेगी । आज सबसे बडी आवश्यकता है कि समाज और देश के शुभ चिन्तक धार्मिक और राजनैतिक सत्ता से उपर उठकर सामाजिक बदलाव के लिये जातीय दम्भ का त्याग करे । समाज में नफरत,भेदभाव की खाई को पाटने में आगे आये तभी सामाजिक समानता स्थापित हो सकती है ,तभीश्शदियों से भेदभाव का जहर पीकर बसर करने वाला वंचित समाज रिसते जख्म के दर्द से राहत पा सकेगा । सामाजिक–समानता के स्वाभिमान के साथ गुजर कर सकेगा वरना आजाद देश में भी उसे गुलामी का एहसास होता रहेगा । यदि ऐसा हुआ तो पूर्व राप्ट्रपति स्व.के.आर.नारायण साहब का कथन– अगर भेदभाव रूपी नर पिशाच को शीघ्रातिशीघ्र खत्म नही किया गया तो यह पूरे राप्ट्र को निगल जायेगा । उक्त आशंका को पर लगे उसके पहले समाज के मठाधीशो और राजनैतिज्ञ सत्ताधीशों को मिलकर समता की क्रान्ति का ऐलान करना होगा। हर देशवासी को सच्चे सिपाहीश्की भांति अपने फर्ज पर खरा उतरना होगा। तभी जातीय भेद का धब्बा देश के माथे से मिट सकेगा और शदियों से शेापित पीडित वंचित समाज रिसते जख्म के दर्द से उबर पायेगा ।

नन्दलाल भारती